ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-10* January-2022
Anthology : The Research

राजस्थानी-पगड़ी कला
Rajasthani-Turban Art

Paper Id.: 15614, Submission Date:05/01/2022, Acceptance Date: 17/01/2022, Publication Date: 20/01/2022

लक्ष्मी कान्त शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर & गेस्ट फेकल्टी,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

"सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति अतुलनीय व प्रशंसनीय है। जिसके अन्तर्गत अनेक तत्वों का समावेश है। इन तत्वों में परिधान (वेशभूषा) का अतीव महत्वपूर्ण स्थान रहा है।[1] इसमें पगड़ी हमारी भारतीय संस्कृति विशेषकर लोक जीवन एवं आदिवासियों का जीवन और परिधानों में से एक विशेष अंग है, जब हम लोक जीवन और उससे जुड़ी संस्कृति की बात करते हैं तो इसमें पगड़ी महत्वपूर्ण हो जाती है। यहाँ पर 'प' का अर्थ है प्रतिष्ठा और 'गड़ी' से अर्थ है जमे रहना जिसका तात्पर्य है प्रतिष्ठा को स्थापित करना। शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग मुख एवं सिर को माना गया है और पगड़ी उस अंग को सुशोभित करती है और यह परम्परा हजारों साल से चली आ रही है। राजा-महाराजाओं योद्धा एवं अमीर-गरीब परिवारों में सिर को ढ़के रहने का रिवाज पहले भी था और आज भी है, और भविष्य में भी रहेगा। इसका सौन्दर्य के साथ-साथ, वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी है। हमारे सिर को सबसे संवेदनशील अंग माना गया है जो ज्यादा गर्मी से गर्म और सर्दी से ठण्ड महसूस करता है। जिसका हमारे मानसिक सन्तुलन पर असर पड़ता है। मामूली सा आघात भी यह बर्दाश्त नहीं कर पाता। अतः पगड़ी ही एक ऐसा परिधान है जो हमारे सिर को कवच प्रदान करता है।

"Indian culture is incomparable and admired in the whole world. Under which many elements are included. In these elements, costumes have played a very important place. 1 In this, turban is a special part of our Indian culture especially folk life and life of tribals and clothes, when we talk about folk life and the culture associated with it, in this The turban becomes important. Here 'P' means prestige and 'Gadi' means to remain fixed which means to establish prestige. The most important part of the body is considered to be the face and the head and the turban adorns that part. And this tradition has been going on for thousands of years. The custom of covering the head in kings and emperors, warriors and rich and poor families was there in the past and is still there, and will be in the future too. Along with its beauty, it also has a scientific approach. Our head is considered the most sensitive part One who feels hot from extreme heat and cold from winter. Which affects our mental balance. It can't tolerate even the slightest blow. Therefore, the turban is the only garment that provides armor to our head.

मुख्य शब्दः संस्कृति, अतुलनीय, प्रंशन्सनिय, परिधान, पगड़ी, संवेदनशील, रेगिस्तान, धूसर, अनुष्ठान, सिँधु घाटी सभ्यता, मोहन जोदडो, हडप्पा, लांघना, आत्म समर्पण, संवर्धन, संग्रहालय

Keywords: Culture, Incomparable, Admirable, Costume, Turban, Sensitive, Desert, Grey, Ritual, Indus Valley Civilization, Mohenjo Daro, Harappa, Transcend, Surrender, Enrichment, Museum.

प्रस्तावना

यहाँ हम एक दिलचस्प लोक मान्यताओं का जिक्र करना चाहेंगे। जिसमें कहा जाता है कि "राजस्थान के रेगिस्तान में एक भूरे और घूसर रंग का जहरीला साँप पाया जाता है। जो चलता नहीं हवा में उड़ता है और सीधे मनुष्य के सिर पर वार करता है और ऐसे व्यक्ति का ईलाज अंधेरे में किया जाता है जहाँ सूर्य की रोशनी नहीं हो अन्यथा रोशनी के पड़ते ही जहर तीव्र गति

से शरीर में फैल जाता है। वहाँ एक पगड़ी ही ऐसी वस्तु है जो आपको इस तरह के साँप के काटने से बचाती है।[2]

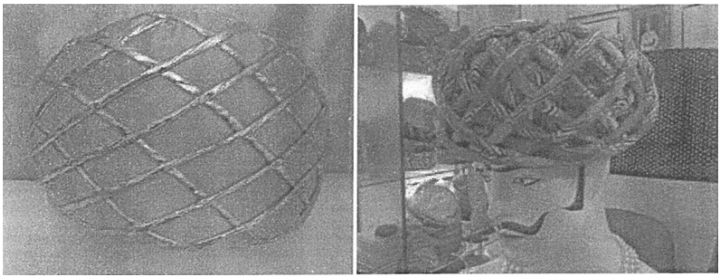

दूसरी कहावत है कि "राजस्थान में ऊँट जब मानसिक रूप से विक्षिप्त या पागल हो जाता है तो वह अपना पहला आक्रमण उसके साथ चलने वाले अपने मालिक के सिर पर करता है और ऐसे में जैसे ही पगड़ी को वह अपने मुँह से पकड़ने की कोशिश करता है इस बीच उसके मालिक को बचकर भागने का मौका मिल जाता है। यहाँ हम यह कह सकते हैं कि हमारे पूर्वजों में गजब का वैज्ञानिक दृष्टिकोण था जो आज भी हजारों साल बाद प्रासंगिक है।"

"पगड़ी का दूसरा पहलू यह भी है कि धार्मिक अनुष्ठान या शुभ कार्य करने में पूरा अर्चना के समय सिर पर किसी वस्त्र के अभाव में हमारे सिर पर हाथ रखकर ही वस्त्र धारण करने जैसे विकल्प की औपचारिकता पूरी की जाती है। रूमाल से सिर ढ़कना भी यही सिद्ध करता है जैसा कि हम कह चुके हैं इसका इतिहास बहुत प्राचीन है। सिन्धुघाटी सभ्यता, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा संस्कृति में पगड़ी की उपस्थिति दिखाई पड़ती है। पुरातन मूर्ति शिल्पों में पगड़ियों का अंकन स्पष्ट दिखाई देता है। यहाँ दिलचस्प बात यह है कि पगड़ी बाँधना एक विशिष्ट कला है और समाज में इसके कलाकार आज भी मौजूद हैं। पगड़ी सूती, रेशमी, जरतारी और शिफोन आदि में तेयार होती है।"[4] जयपुर राजघरानों के इतिहास में यह पागलपदार, शहगड़पाग, सफेदढाकारी, चन्देरी, ताशकी, बूशीरी, पोतियों, गुजराती, चौकड़ी, चिंटल री, पोचाताश, रूपेरी, नागोरण, मोलिया आदि नामों से पुकारी जाती है। जिनमें नागौरी पगड़ी प्रमुख है।

उदयपुर के उमराव पगड़ी, जयपुर का शाही साफा, जोधपुर का जसवन्त शाही पेच आदि प्रचलित है।

पगड़ी अथवा पाग हमारे समाज में दुःखःसुख को भी प्रतिबिम्बित करती है। जैसे शोक के समय मृतक के निकटवर्ती परिजन सफेद पगड़ी, तीये अथवा उठावणा पर गुलाबी, चन्देरी, सोसमी, खाकी, भूरी या काले रंग की पगड़ी पहनते हैं। विवाह के अवसर पर केसरिया या लाल चूनर, राखी पर बहन द्वारा मोठड़ा और होली पर फागुनिया बाँधने का प्रचलन है। दिवाली पर कहीं-कहीं राजस्थान में काली पगड़ी बाँधी जाती है।

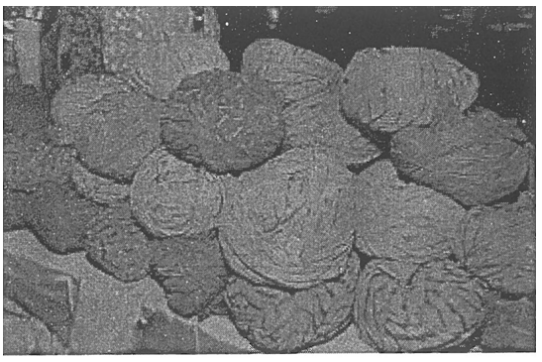

पगड़ी चूँकि सिर का अभिन्न अंग है। अतः इसको ठोकर मारना, लाँघना या नीचे रखने का अर्थ है कि पाग बाँधने वाले व्यक्ति का घोर अपमान जबकि उसका बंधवाना सम्मानसूचक है। अतिथि के सामने नंगे सिर आना कहीं-कहीं आज भी अपमानजनक अथवा अशुभ माना जाता है। इसी तरह युद्ध स्थल से मात्र योद्धा की पगड़ी का लौट आना उसकी मृत्यु का सूचक है। वहीं पगड़ी को छीनकर लाना विजय का सूचक है और दुश्मन के हाथ लग जाना अपमानजनक है। पगड़ी हासिल करने के लिए लोग जान पर खेल जाते थे। पगड़ी को दूसरे व्यक्ति के पैर में रखने का तात्पर्य उस व्यक्ति के प्रति आत्मसमर्पण होता था। यहाँ की किसी भी धार्मिक समारोह, पूजा-अर्चना, मन्दिर-मस्जिद में देवी-देवताओं के समक्ष सिर ढँकना आवश्यक माना जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र को लिखने का महत्वपूर्ण कारण हमारी संस्कृति से जुड़ी पगड़ी की महत्ता व इतिहास को जानना था, की पगड़ी हमारी संस्कृति में कब से जुड़ी हुई है अथवा पगड़ी का इतिहास कितना पुराना है तथा अलग अलग स्थान पर विभिन्न त्यौहार या उत्सव या अन्य किसी अवसर पर किस तरह की पगड़ी हमारे संस्कृति में बांधने का रिवाज है। पगड़ी हमारी संस्कृति से तथा हमारे दैनिक जीवन से किस तरह जुड़ी हुई है। इसी को जानने के लिए इस शोध पत्र को लिखा गया है।

निष्कर्ष

पगड़ी संस्कृति के महत्व को देखते हुए आज सरकार भी देश एवं विदेशों में उसका प्रदर्शन कला के तौर पर किया जाता है और यहीं वजह है कि आज दुनिया भर में अलग-अलग जगहों पर इसके शोध कार्य किये जा रहे हैं। फिर भी इसके संवर्धन और संरक्षण के लिए जरूरी है कि उस पर संग्रहालय की स्थापना हो, जिससे आने वाली पीढ़ियों को अपनी पुरातन संस्कृति एवं पहनावे की विस्तृत जानकारी मिल सकें अन्यथा यह संस्कृति खतरे में पड़ जायेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कमलेश माथुर: पगड़ी, पृ.सं.121, प्रथम संस्करण-1998*
2. *लोक कहावत: प्रबुद्ध जनों का वचन: मानव इतिहास काल*
3. *लोक कहावत: प्रबुद्ध जनों का वचन: मानव इतिहास काल*
4. *आर्टिस्ट सुरेन्द्र पाल जोशी: एक वक्तव्य (साक्षात्कार विधि)*
5. *तारकनाथ बड़ेरिया : भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रथम संस्करण- 2004*
6. *कमलेश माथुर : लोक संस्कृति के सोपान, प्रथम संस्करण 1998*
7. *चन्द्रमणि सिंह . राजस्थान की ग्रामीण कलाएं एवं कलाकार , प्रथम संस्करण 1997*